(20)

गुलाम से महापुरुष बनने वाले--

बुकर टी० वाशिङ्गटन

सम्पादकीय विभाग
शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक 'चाँद' 'सतयुग' 'प्रणवीर'

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN

SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुलाम से महापुरुष बनने वाले-- बुकर टी० वाशिंगटन



अबसे सौ वर्ष पहले अमरीका की किसी कोयले की खान में एक १२ वर्ष का नीग्रो (हब्शी) लड़का मजदूरी कर रहा था। एक दिन अँधेरे में कोयला ढोते हुए उसने दो अन्य मजदूरों को आपस में बात करते हुए सुना कि "हैम्पटन नगर में हब्शियों के लिये एक ऐसा बड़ा स्कूल खुला है, जहाँ पर वे पढ़ने के साथ ही अपने गुजारे के लिये कमाई भी कर सकते हैं।" इन शब्दों के कान में पड़ते ही उस बालक को "हैम्पटन" की धुन लग गई। क्योंकि जबसे उसने होश सँभाला था उसे पढ़ने का शौक था, पर दुर्भाग्यवश नीग्रो लोगों के पढ़ने की न कोई उचित व्यवस्था थी और न उनके पास इसके लायक साधन ही थे। यह लड़का जिसका नाम "बुकर टी० वाशिंगटन" (सन् १८५६ से १९१५) था, दिन में कोयले की खान में मजदूरी करके रात के समय किसी छोटे से स्कूल में एकाध घण्टा पढ़ लिया करता था, पर इतने से उसे सन्तोष नहीं होता था।

बुकर का जन्म गुलामी की दशा में हुआ था। उस समय गुलामों के मालिक उनके साथ कैसा भी व्यवहार कर सकते, उनको गाय, बकरी की तरह किसी के हाथ बेच सकते थे। पर सन् १८६० में अमरीका के महान् प्रेसीडेण्ट अब हम लिङ्कन ने इस अमानवीय प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई और विरोधी दल से कई साल तक युद्ध करके समस्त गुलामों को स्वतन्त्र कर दिया। इस प्रकार सात वर्ष की आयु में 'बुकर' 'स्वाधीन' तो हो गया पर इसके बाद भी गरीबी और अशिक्षा के कारण नीग्रो लोगों की स्थिति में शीघ्र ही कोई सुधार नहीं हुआ। तब भी वे थोड़े से वेतन पर गोरे लोगों के खेतों या कारखानों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कठोर परिश्रम करते थे और उनके साथ वैसा ही भेदभाव का बर्ताव किया जाता था जैसा हमारे देश में अछूतों के साथ किया जाता है।

हैम्पटन के स्कूल की चर्चा सुनने के पश्चात् बुकर ने कोयले की खान की नौकरी छोड़ दी और पाँच रुपया मासिक तथा भोजन पर एक गोरी महिला के यहाँ काम करने लग गया। यह स्त्री बड़ी सख्त थी और उसके यहाँ काम करने वाले प्रायः दो-चार सप्ताह में ही भाग जाते थे। पर बुकर ने उसकी सेवा ऐसे परिश्रम और ईमानदारी से की कि वह डेढ़ वर्ष तक बागवानी का काम करता रहा, और वह उसकी अनेक प्रकार से सहायक बन गई। यह उसे स्कूल जाने के लिये एक घण्टा की छुट्टी देती थी और स्वयं भी काम करने की अच्छा ढङ्ग सिखाया करती थी। इस प्रकार बुकर ने इस डेढ़ वर्ष में जीवन-निर्वाह की बहुमूल्य शिक्षा प्राप्त की।

ज्ञान की खोज में—

पर इस दशा में भी वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य को नहीं भूला और सन् १८७२ में, जब सोलह वर्ष का हो चुका, वह किसी साधन के बिना 'हैम्पटन' को चल दिया, जो उसके घर 'मालडेन' से पाँच सौ मील दूर था। उसके पास न ठीक जूत थे और न कपड़े। पर जो कुछ भी मिला उसे एक थैले में रखकर और जेब केवल डेढ़ रुपया (डालर) लेकर वह यात्रा को निकल पड़ा। इस मार्ग में कुछ दूर तक रेल जाती थी और शेष भाग घोड़ा-गाड़ियों से पूरा करना होता था। बुकर के पास इतना पैसा न था कि वह हैम्प्टन तक का पूरा किराया दे सकता इसलिये वह कभी सवारी पर और कभी पैदल चलने लगा। रास्ते में जब भूखों मरने की नौबत आ जाती तो मजदूरी करके कुछ कमा लेता था। इस प्रकार बहुत अधिक कठिनाइयाँ सहन करते हुए वह कई सप्ताह में हैम्पटन के स्कूल में जा पहुँचा। जब वह इस फटी-टूटी हालत में उस संस्था की प्रधान अध्यापिका के सामने पहुँचा तो वह उसे एक आवारा घुमक्कड़ की तरह जान पड़ा, और उसे स्कूल में दाखिल करने में वह सङ्कोच प्रकट करने लगी। कुछ घण्टे बाद उसने कहा कि 'बगल के अध्याप-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कीव कमरे को साफ करना है, इस झाड़ू को लेकर अच्छी तरह साफ कर डालो !"

अन्य कोई व्यक्ति होता तो आरम्भ में ही इस प्रकार का 'स्वागत' पाकर निराश हो जाता। पर बुकर इस आदेश को सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने समझ लिया कि इस परीक्षा में पास होने पर ही मेरा भविष्य निर्भर है। उसने बड़े उत्साह से झाड़ू लेकर कमरे को तीन बार झण्डा और फिर कपड़ा लेकर वहाँ रखी सब मेज-कुर्सियों को अच्छी तरह पोंछा। कुछ देर बाद प्रधान अध्यापिका जब जाँच करने आई तो उसने कई जगह अपने रूमाल से रगड़कर देखा। पर जब उसे कहीं गर्द का एक कण भी दिखाई न पड़ा तो उसने सन्तुष्ट होकर कहा—"मैं समझती हूँ कि तुम इस संस्था में शामिल होकर अध्ययन कर सकते हो।"

इस प्रकार झाड़ू लगाने की परीक्षा में पास होने पर बुकर को इतनी प्रसन्नता हुई जितनी बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों की प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर भी अन्य लोगों को ही नहीं होती होगी। अध्यापिका ने उसे कई कमरों को देख-रेख का काम सुपर्द कर दिया और इसके बदले में उसके भोजन और निवास की व्यवस्था हो गई। साथ ही इस घटना के फलस्वरूप प्रधान अध्यापिका को बुकर की ईमानदारी और परिश्रमशीलता का भी अनुभव हो गया और वह अन्त तक उसकी सहायिका बनी रही।

हैम्पटन में बुकर का परिचय जनरल आर्मस्ट्रौंग से हुआ और वह उनसे इतना ज्यादा प्रभावित हुआ कि अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है कि "मुझे अमरीका और योरोप में अनेक महान् पुरुषों से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, पर जनरल आर्मस्ट्रौंग से बढ़कर सदाशय व्यक्ति और कोई नहीं मिला। गृहयुद्ध के अवसर पर वह नीग्रो लोगों का पक्ष लेकर दक्षिण के गोरों से लड़ा था और अब उनके लिये शिक्षा और जीविकोपार्जन की सुविधायें प्रदान कराने के लिये दिन-रात परिश्रम करता रहता था। हैम्पटन स्कूल के विद्यार्थी हन सद्गुणों के कारण उसकी पूजा करते थे और यदि कभी उसकी सेवा करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



का कोई अवसर मिल जाता तो अपना अहोभाग्य समझते थे। परोपकारी व्यक्तियों की ऐसी ही महिमा है ।

इस प्रकार कई वर्ष तक कठोर परिश्रम और त्याग-तपस्या का जीवन व्यतीत करके वाशिंगटन ने वह ज्ञान राशि प्राप्त की, जिसके लिये वह लालायित रहा करता था। पर इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये उसे तथा उसके अन्य साथियों को गरीबी की परिस्थितियों से कैसा संघर्ष करना पड़ता था, इसका वर्णन करते हुए उसने अपनी 'आत्मकथा' में लिखा है—

"उस समय हैम्पटन में जितने विद्यार्थी पढ़ रहे थे मैं उनमें काफी छोटी उम्र का था। अधिकांश तो पूरे मर्द या औरत थे, जिनमें से कई चालीस वर्ष के थे। जब मैं उक्त शिक्षा-संस्था में अपने प्रथम वर्ष की स्मृतियों का ध्यान करता हूँ तो मुझे अनुभव होता है कि वहाँ पर एकत्रित तीन चार सौ व्यक्तियों के समान अन्य किसी जन-समुदाय का मिलना बड़ा कठिन है। वे सब ज्ञान प्राप्ति के लिये हृदय से इतने उत्सुक थे कि दिन-रात या तो पढ़ने में लगे रहते थे या कोई अन्य परिश्रम का कार्य किया करते थे। बहुत से अधिक आयु वाले तो पाठ्य पुस्तकों को अच्छी तरह समझने में असमर्थ हो चुके थे, तो भी ऐसी संलग्नता से पढ़ने में परिश्रम करते रहते थे, कि उनकी दशा देखकर दया आती थी। उनमें से कुछ ऐसे ही गरीब थे जैसा कि मैं था और पढ़ाई में घोर परिश्रम करने के साथ ही उन विचारों को अपनी दरिद्र अवस्था के साथ भी संघर्ष करना पड़ता था। उनमें से कुछ ऐसे थे जिनको अपने वृद्ध माता-पिता का पालन करना पड़ता था और कुछ लोगों की स्त्रियाँ घरों पर थीं, जिनके निर्वाह की व्यवस्था करना आवश्यक था।"

"इस प्रकार उस समय वहाँ सभी पढ़ने वालों के सामने एक ही उद्देश्य था कि किसी प्रकार अपने घर वालों की दशा को सुधारा जाय। अपने सुख-दुःख की वहाँ किसी को जरा भी चिन्ता न थी। यही हाल वहाँ अध्यापकों और व्यवस्थापकों का भी था। वे सब गोरे अमरीकन थे, पर रात-दिन इन काले विद्यार्थियों के लिये परिश्रम करते रहते थे। वे जब किसी प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विद्यार्थियों की सहायता करने में समर्थ होते तो अत्यन्त प्रसन्नता अनुभव करते थे।"

'जब प्रथम वर्ष की पढ़ाई समाप्त हो जाने पर वार्षिक अवकाश की छुट्टियाँ हुईं तो अधिकांश विद्यार्थी अपने घरों को जाने की तैयारी करने लगे। उनको देखकर मुझे भी अपने घर की याद सताने लगी, पर मेरे पास वहाँ जाने के लिये मार्गव्यय ही न था। तब मैंने विचार किया कि किसी पास के कस्बे में ही जाकर कुछ काम किया जाय जिससे अगले वर्ष के लिये कुछ रुपया जमा हो सके। पर मेरे पास कहीं भी जाने लायक खर्च न था अब मैंने हैम्पटन में ही एक होटल में नौकरी करली। पर वहाँ मुझे इतना कम वेतन दिया गया कि वह सब भोजन में ही खर्च हो जाता था। मैंने अपना खर्च हर तरह सेकम करके यह चेष्टा की इन छुट्टियों में मैं इतना कमा लूँ कि स्कूल का ऋण, जो १६ डालर मुझ पर हो गया था, चुका दूँ। पर सब कुछ प्रयत्न करने पर भी मैं इसमें कृतकार्य न हो सका। तब मैं संस्था के खजानची जनरल मार्शल के पास गया और उनसे अपनी परिस्थिति की बात स्पष्ट रूप से कह दी। वे मेरी सचाई और दीनता पर कृपालु हो गये और आदेश दिया कि तुम स्कूल का कर्ज सुविधानुसार कभी भी चुका सकते हो।"

क्या यह दृश्य हमको भारतवर्ष के प्राचीन गुरुकुलों की याद नहीं दिलाते? यद्यपि देश, काल में भेद होने से इन दोनों प्रकार के रहन-सहन तथा आचार-विचारों में अन्तर अवश्य था, पर यदि उनकी मनोभूमि और त्याग-तपस्या पर विचार किया जाय तो मालूम होता है कि जिस प्रकार हमारे गुरुकुलों के विद्यार्थी गौ-पालन तथा कृषिकार्य करके अपना निर्वाह करते थे, उसी प्रकार ये गरीब नीग्रो सर्वथा साधनहीन होने पर भी केवल परिश्रम और कष्ट सहन के आधार पर ज्ञान की आराधना कर रहे थे। इनमें से भी अधिकांश का ध्येय अपने लिए सुख सुविधा की स्थिति प्राप्त करना नहीं था; वरन् वे अपने पददलित सम्बन्धियों और जाति भाइयों की दुर्दशा का सुधार करना ही अपना परम कर्तव्य मान रहे थे। यह उन लोगों के स्वार्थ त्याग का ही परिणाम है कि आज नीग्रो जाति के व्यक्ति उस शोचनीय गुलामी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हालत से उठकर अमरीकन समाज में क्रमशः मानव अधिकारों को प्राप्त करते जाते हैं।

इसकी तुलना जब हम आज के भारतीय विद्यार्थी समाज से करते हैं तो सिवाय निराशा और शोक के अनुभव नहीं होता। अत्यन्त खेद का विषय है कि जिस देश के निवासियों के सामने प्राचीन गुरुकुल प्रणाली और ऋषि-मुनियों के आश्रमों का सर्वोच्च आदर्श मौजूद है, वहीं के विद्यार्थी अब नीच मनोवृत्तियों और चरित्रहीनता के मार्ग को अपनाते जा रहे हैं। समाज-सेवा और परोपकार की भावना तो दूर रही इन दिनों वे सामान्य समय और सज्जनता के व्यवहार को भी त्यागते जाते हैं। उनकी रुचि और अभिलाषा मुख्यतया बढ़िया फैशन तथा गन्दे मनोरंजन की तरफ ही दिखाई पड़ती है। ऐसे विद्यार्थी घर वालों के सहायक होने के बजाय उनके लिये भारस्वरूप ही सिद्ध होते हैं।

परोपकारमय जीवन—

हैम्पटन से अपने निवास स्थान मालडेन आते ही 'बुकर' ने सेवाकार्य आरम्भ कर दिया। उसने हैम्पटन में ही वहाँ के अध्यापकों और संचालकों का सेवा भाव देखकर यह निश्चय कर लिया था कि मैं अपनी इस कष्टोपार्जित विद्या का उपयोग दूसरों की भलाई के लिए करूँगा और आजीवन यही प्रयत्न करता रहूँगा कि यह दुनियाँ कुछ अच्छी बन सके। इसलिए वह घर लौटते ही वहाँ के स्कूल में अध्यापन कार्य करने लगा। वहाँ की नगरपालिका उसे वेतन तो थोड़ा ही देती थी, पर वह अपनी खुशी से सुबह के आठ बजे से रात के दस बजे तक स्कूल का ही काम करता रहता था। कुछ ही समय काम करने के पश्चात् इसे मालूम कि यहाँ बहुसंख्यक व्यक्ति ऐसे हैं जो पढ़ने की बड़ी अभिलाषा रखते हैं, पर उनको जीवन निर्वाह के लिये दिन भर मजदूरी करनी पड़ती है, इसलिए स्कूल नहीं आ सकते। इस पर वाशिंगटन ने रात्रि-पाठ-शाला खोल दी और शीघ्र ही उसमें भी उतने ही विद्यार्थी आने लगे जितने कि दिन में आते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर इतने पर ही उन्होंने अपना प्रयत्न समाप्त नहीं कर दिया। लोगों में ज्ञान फैलाने के लिये उन्होंने एक वाचनालय और 'व्याख्यान-समिति' भी स्थापित की। इतवार की छुट्टी के दिन भी वे दो स्थानों में "सन्डे स्कूल" चलाते थे जिनमें उन प्रौढ को पढ़ाया जाता था जिनको नौकरी के कारण अन्य दिन अवकाश नहीं मिलता था। इसके अतिरिक्त वे उन नवयुवकों को प्राइवेट ट्यूशन के तौर पर पढाते थे जो कुछ तैयारी करके हैम्पटन के बड़े स्कूल में दाखिल होना चाहते थे। इतना अधिक परिश्रम करने पर भी उनको इस बात का कोई ख्याल न था कि पढ़ने वाले उनको कुछ पारश्रमिक देते हैं या नहीं ? जो कोई जितना दे सकता वे उसी पर सन्तोष कर लेते थे। उनका मुख्य उद्देश्य यही था कि किसी तरह वे अपनी जाति वालों को उन्नतिके मार्ग पर अग्रसर कर सकें।

वाशिङ्गटन केवल पुस्तकों की पढ़ाई पर ही विश्वास नहीं रखते थे। वरन् वे चाहते थे कि उनके विद्यार्थी जो कुछ शिक्षा प्राप्त करें उसे व्यावहारिक जीवन मे भी चरितार्थ। इस लिये स्कूली पाठ्य क्रम के अतिरिक्त विद्यार्थियों को यह भी सिखलाते थे कि बालों में कैसे कन्घा करना,अपने हाथ और चेहरे को साफ रखना, वस्त्रों की स्वच्छता का ध्यान रखना, ठीक ढङ्ग से दाँतों को ब्रुश से साफ करना और नियमित स्नान आदि। उन्होंने लिखा है कि शिक्षा संस्थाओं में मैं सदा दाँतों की सफाई पर जोर देता रहा हूँ और मेरा विश्वास है कि देखने में साधारण होने पर भी सभ्यता के प्रसार में इसका भी बहुत बड़ा स्थान है।

एक पद दलित जाति का पुनः निर्माण–

पर यह कार्य सहज नहीं था। नीग्रो लोग कई पीढ़ियों से पशुओं की तरह गोरों की गुलामी कर रहे थे और उसके पहले वे अफरीका में जङ्गली जीवन व्यतीत करते थे। ऐसे लोगों मे यह आशा करनी व्यर्थ थी वे शीघ्र ही 'विद्या' के वास्तविक स्वरूप और उद्देश्य को समझ जायँगे। वैसे तो कानून द्वारा गुलामी से छुटकारा पाने के कुछ समय बाद ही उनमें पढ़ने का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बहुत अधिक शौक पैदा हो गया था और उनके लिए जितने भी स्कूल खाने गये उनमें विद्यार्थियों की जरा भी कमी न रही। इन लोगों में अधिकांश बड़ी उम्र के युवक और चालीस-पचास वर्ष तक के प्रौढ़ थे। पर इनका मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्राप्त करके अपनी ज्ञान वृद्धि करना नहीं था वरन् वे समझते थे कि अगर वे पढ़ लिख जायेंगे तो मेहनत मजदूरी से छुटकारा पाकर 'बाबू-गरी' की नौकरी पाकर आराम से रह सकेंगे वे ख्याल करते थे कि अगर वे ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें पढ़ लेंगे और ग्रीक-तथा 'लेटिन' जैसी प्राचीन भाषाओं की कुछ जानकारी प्राप्त कर लेंगे तो 'महा-मानव' के दर्जे पर पहुँच जायेंगे।

इसका नतीजा यह हुआ कि नीग्रो लोगों में कुछ ही समय में 'टीचर' और 'प्रीचर' (शिक्षक और पुजारी) लोगों की भरमार हो गयी। उसमें कुछ लोग परोपकारी, सेवाभावी और धर्म परायण भी थे, पर अधिकांश इन कार्यों को इसी उद्देश्य से करना चाहते थे कि वे आराम की जिन्दगी व्यतीत कर सकें। उस समय कितने ही ऐसे भी व्यक्ति शिक्षक बने जो केवल अपना नाम ही लिखना जानते थे। एक ऐसे ही व्यक्ति से वाशिङ्गटन को भेंट हुई जो इन्होंने पूछा कि आप 'पृथ्वी की आकृति कैसी है इस विषय को बच्चों को किस प्रकार समझायेंगे ? उसने उत्तर दिया कि 'पृथ्वी चपटी है या गोल है—मैं दोनों तरह पढ़ाने को राजी हूं। इस विषय में मेरे स्कूल से अधिकांश संचालक जैसा चाहेंगे उसी तरह मैं पढ़ाऊँगा।

पर पुजारी (पादरियों) के पेशे की हालत इससे भी कहीं अधिक खराब थी। पुजारी बनने के इच्छुक लोगों में बहुसंख्यक व्यक्ति अल्पशिक्षित ही नहीं थे वरन् वे चरित्रहीन भी होते थे। स्वाधीनता के आरम्भिक दिनों जो व्यक्ति थोड़ा-सा पढ़ना जान जाता था पुजारी बनने को तैयार हो जाता था। इसका तरीका भी उन लोगों ने बड़ा अजीब निकाल रखा था। वे कहते थे कि हमको इस कार्य के लिए भगवान की तरफ से "धर्म प्रचार करने की प्रेरणा" (काल) प्राप्त हुई है। इस तरह 'प्रेरणा' प्रायः गिर्जाघर में ही प्राप्त होती थी और वह व्यक्ति किसी दिन वहाँ बैठे-बैठे जमीन पर इस प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

औंधा गिर जाता था जैसे उसे गोली लगी हो या बिजली का झटका दिया हो। वह इसी प्रकार घण्टों तक बिना बोले और हिले-डुले जमीन पर ही पड़ा रहता था। यह देखकर लोगों में यह बात फैल जाती थी कि अमुक व्यक्ति को 'प्रेरणा' प्राप्त हुई है। अगर वह पहली बार 'प्रेरणा' पर ध्यान नहीं देता था, तो ऐसी ही 'प्रेरणा' दूसरी और तीसरी बार भी आती थी और अन्त में उसे 'धर्म-प्रचार के काम में लगना ही पड़ता था।

हमारे देश के 'भगत' बनने वाले—

इस वर्णन को पढ़कर हमको अपने देश के उन लोगों की याद आ जाती है जो देवी-देवताओं की पूजा करते समय 'आवेश' में आकर उछलने-कूदने और अपने ही शरीर को लोहे की जंजीरों से ठोकने-पीटने लगते हैं। उनके अनुयायी भी उन नीग्रो लोगों की तरह अशिक्षित और अन्धविश्वासी होते हैं और इस प्रकार के दृश्य को देखकर कहने लगते हैं 'कि इस भगत के सर पर देवता आ गया है।" तब वे उससे अपने लाभ बीमारी या किसी अन्य आवश्यकता के सम्बन्ध में प्रार्थना करने लगते हैं और वे 'भगतजी' भी उनको तरह-तरह से देवता की पूजा के विधान बतलाने लगते हैं। हम जानते हैं कि इन दिनों शहरों में तो यह प्रवृत्ति अधिकांश में "छोटी-जाति" के कुछ स्त्री-पुरुषों में ही रह गई है, पर अनेक गाँवों में अब भी इसका काफी जोर है।

इन दिनों इस 'प्रेरणा' ने एक दूसरा रूप ग्रहण किया। पच्चीस-तीस वर्ष से हमारे देश में 'कीर्तन' का जोर बढ़ गया है। हम जानते हैं कि आध्यात्मिक और भक्ति की भावनाओं को उद्दीप्त करने के लिये 'कीर्तन' बड़ा प्रभावशाली माध्यम है, पर हमारे देशवासियों को अन्धविश्वासी मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप उसमें भी ऐसी 'प्रेरणा' वाले बहुसंख्यक व्यक्ति घुस जाते हैं। ये लोग 'कीर्तन' करते-करते ऐसी भावुकता में आ जाते हैं कि कभी तो रोने लगते हैं, कभी पुकारने लगते हैं और कभी बेसुध हो जाते हैं। यह देखकर 'धर्म भीरु' जनता यही समझने लगती है कि ये सज्जन बहुत बड़े 'भक्त' हैं और कीर्तन करते-करते इनको भगवान के स्वरूप के दर्शन हो जाते हैं अथवा ये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किसी बहुत ऊँचे 'आध्यात्मिक स्तर' पर पहुँच जाते हैं। पर हम जानते हैं कि ऐसे 'भक्त' प्रायः कीर्तन' की आड़ में ही आराम से जीवन व्यतीत करने की व्यवस्था कर लेते हैं और कितने ही धर्म के नाम पर 'दुराचार' का मार्ग ढूँढ़ लेते हैं। हम इस सम्बन्ध में एक ऐसे उदाहरण को जानते हैं जिसमें एक बड़े घर की महिला ऐसे ही किसी कीर्तनकार 'भक्त' के निकट सम्पर्क में आकर भ्रष्ट हो गई थी और भेद के प्रकट हो जाने पर उसे अपने जीवन की इतिश्री कर लेनी पड़ी थी। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि आध्यात्मिता पर आधारित कीर्तन-प्रथा आज ऐसे 'भक्तों' के कारण काफी बदनाम हो गई है।

सेवा के नये क्षेत्र—

वाशिंगटन ने हैम्पटन में तथा उनके पश्चात् अपने नगर में जिस प्रकार परिश्रम और सेवाभाव से शिक्षा ग्रहण करने और उसका प्रसार करने का कार्य किया उससे सभी लोगों को उसकी सत्यनिष्ठा और परोपकारिता पर दृढ़ विश्वास हो गया। खास तौर पर हैम्पटन की शिक्षा-संस्था के प्रिंसपल जनरल आम्सस्ट्रौंग तो उस पर आरम्भ से ही बड़ी कृपा रखते थे और वे आजीवन उसे आगे बढ़ने में सहयोग देते रहे। अभी 'मालडेन' के स्कूल में काम करते हुए उसे कठिनता से तीन-चार वर्ष हुए थे कि जनरल ने उसे हैम्पटन बुलाकर अमेरिका के मूल निवासी 'रेड इंडियन' विद्यार्थियों का शिक्षक और निरीक्षक (गृहपति) बना दिया।

ये 'इण्डियन' भी निराले ढङ्ग के मनुष्य थे। यद्यपि गोरों ने उनकी जाति को प्रायः नष्ट कर दिया था और अब कुछ हजार लोग दूरवर्ती भागों में सरकारी सरक्षण में बचे हुए थे। पर अब भी वे अपने को अमेरिका का असली स्वामी ख्याल करते थे। इसलिये वे अपने को गोरों से ऊँचा मानते थे। नीग्रो (हब्शी) लोगों को तो वे अपने से बहुत नीचा समझते थे, क्योंकि गुलामी के दिनों में उनके मुखिया भी गुलाम खरीदकर उनसे अपने खेतों में काम कराते थे। ऐसी दशा में वाशिंगटन का काम बड़ा कठिन था। एक नीग्रो होकर ७५ इंडियन विद्यार्थियों को वश में रखना और उन्हें आदेश देना सहज बात न थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर अपने सच्चे सेवाभाव और परोपकार के सिद्धान्त का पालन करने के द्वारा उसने उन अर्द्धसभ्य विद्यार्थियों को पूर्ण रूप से प्रभावितकर लिया और वे खुशी से उसकी आज्ञाओं को मानने लगे।

इन 'इण्डियनों' को शिक्षा देने के कार्य में दो एक बार ऐसी घटनाएँ हुईं जिनसे प्रकट होता है कि अमेरिका में 'जाति-भेद' का विष कुछ अंशों में हमारे देश की तरह व्याप्त है। 'इण्डियन' लड़कों में से एक बीमार पड़ गया और वाशिंगटन से कहा गया कि वह उसे राजधानी में पहुँचाकर सरकारी कर्मचारियों द्वारा उसे अपने घर भिजवा दे। जब वे दोनों एक छोटे जहाज पर सफर कर रहे थे तो खाने की घण्टी बजी। पर भोजनगृह से पहुँचने पर व्यवस्थापक ने कहा कि वह 'इण्डियन' को बैठाकर खिला सकता है पर वाशिंगटन को नहीं। इन दोनों का रंग लगभग एक-सा ही था, पर भोजन-गृह वाले ने किसी तरह दोनों को अलग-अलग पहिचान लिया। ऐसी ही घटना राजधानी में पहुँचने पर हुई। वे जिस होटल में ठहरने को पहुँचे उसके कर्मचारी ने 'इण्डियन' लड़के को ठहराना स्वीकार किया पर वाशिंगटन के लिये इनकार कर दिया।

पर उस समय भी नीग्रोजनों में इतना स्वाभिमान आ गया था कि इस प्रकार के व्यवहार की परवाह न करके कानूनी तौर से अपने को गोरों से कम नहीं समझते थे। उन्हीं दिनों श्री फ्रेडरिक डगलस प्रान्तीय शासन-परिषद् के सदस्य थे। वे नीग्रो थे और बड़े सज्जन तथा सदाशय व्यक्ति थे। एक बार जब वे रेल में यात्रा कर रहे थे तो कर्मचारियों ने रंग-भेद के कारण उनको मुसाफिरों के डिब्बे में से उतरकर पार्सल के डिब्बे में बैठने के लिये कहा। उन्होंने वैसा ही किया। कुछ देर पश्चात् कुछ गोरे यात्री उस पार्सल के डिब्बे में आकर आश्वासन देने लगे। एक ने कहा—"श्रीमान् डगलस! मुझे अफसोस है कि आपको इस प्रकार नीचा दिखाया गया।" डगलस एक बक्स पर तनकर खड़े हो गये और कहा कि—"वे फ्रेडरिक डगलस को कभी नीचा नहीं दिखा सकते। मेरे भीतर जो आत्मा है उसे कोई हीन नहीं बना सकता। इसलिये इस व्यवहार से मैं नीचा नहीं हुआ, वरन् जिन्होंने ऐसा व्यवहार किया वे ही नीच हुए हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वास्तव में डगलस का कहना सत्य था। कोई मनुष्य चाहे कैसी भी ऊँची जाति का क्यों न हो अगर वह दूसरों के साथ मनुष्यता का वर्ताव करना नहीं जानता तो उसे नीचा ही समझा जाना चाहिये। जो सचमुच ऊँचा होगा वह किसी के साथ अपमान, तिरस्कार का वर्ताव न करेगा। इस सम्बन्ध में अमेरिका के उद्धारक प्रेसीडेण्ट वाशिंगटन का उदाहरण बड़ा प्रेरणादायक है। एक दिन रास्ते में किसी नीग्रो ने बड़ी विनय के साथ टोपी उतार कर उनको सलाम किया। वाशिंगटन ने भी प्रत्युत्तर में टोपी उठाकर उसका अभिवादन किया। इस पर उनके कुछ गोरे साथियों ने कहा कि आपने यह ठीक काम नहीं किया। वाशिंगटन ने उत्तर दिया, "क्या तुम यह चाहते हो कि मैं उस गरीब, अशिक्षित नीग्रो के मुकाबले में अपने को अविनीत सिद्ध होने देता?"

ये दोनों घटनायें हम भारतवासियों की आँख खोल देने वाली हैं। हमारे यहाँ करोड़ों व्यक्तियों को बिना योग्य-अयोग्य का विचार किये नीचा और अछूत मान लिया गया है और हम उनके साथ उससे कहीं गर्हित व्यवहार करते हैं जैसा अमेरिकन गोरों द्वारा नीग्रो जनों के साथ किया जाता है। दक्षिण भारत में तो अभी तक इतनी बुरी हालत थी कि अगर सड़क पर कोई ब्राह्मण आता हो तो सामने से आते हुए अछूत जातीय व्यक्ति को सड़क छोड़कर कई गज दूर भाग जाना पड़ता था! हमारे यहाँ के समाज सुधारक वर्षों से इस अमानवीय अत्याचार को मिटाने के लिए पुकार मचा रहे हैं, पर अब भी अधिकांश 'ऊँची जाति' का अभिमान रखने वाले अपने दुराग्रह को त्यागने को राजी नहीं होते। इसका परिणाम यह हुआ कि मद्रास के 'नीची जाति' वालों ने 'वोट' के जोर से अपना शासन स्थापित कर लिया और उपद्रव खड़ा करके कितने ही ब्राह्मणों की चोटियाँ काट डालीं और जनेऊ तोड़ दिये। महाराष्ट्र में डा० अम्बेडकर की प्रेरणा से लाखों अछूत हिन्दू धर्म त्यागकर बौद्ध हो गये और हर तरह से हिन्दू जाति की जड़ काटने की चेष्टा करने लगे।

यद्यपि हमारे देश में भी श्री महादेव गोविन्द रानाडे जैसे व्यक्ति हो चुके हैं, जिन्होंने हाईकोर्ट का जज और देशपूज्य नेता होने पर भी किसी अछूत बुढ़िया की प्रार्थना करने पर उसका बोझा उठाकर सिर पर रखवा दिया,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर हम अच्छी तरह जानते है कि अभी तक हमारे यहाँ के अधिकांश लोगों की मनोवृत्ति बदली नहीं है। अब सरकारी कानून और परिस्थितियों वश वे प्रकट में अछूतों को कुछ सुविधाएँ देने को तैयार हो जाते हैं पर उनमें ऊँच-नीच की भावना अब भी उसी दूषित रूप में मौजूद है। खासकर 'पण्डित' और 'पुजारी' श्रेणी के लोग तो अपने को 'पवित्रता' का ठेकेदार समझकर अछूतों से हमेशा 'दूर-दूर' ही कहते रहते हैं। पुराने अथवा सङ्कीर्ण विचारों के व्यक्ति अपने मन में चाहे जो कुछ समझते रहें, पर यह स्पष्ट है कि यह अन्यायपूर्ण कुप्रथा समाज तथा राष्ट्र के लिये कभी हितकर नहीं हो सकती। जो किसी के साथ अन्याय करता है उसे स्वयं भी दूसरों का अन्याय, अत्याचार सहन करना पड़ता है यही परमात्मा का नियम है। इसलिए यदि 'ऊँचा' होने का मिथ्या अभिमान रखने वालों को अपने दुराग्रह का कठोर दन्ड भोगना पड़े तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

साथ ही जो लोग 'नीची जाति' के कहे जाते हैं उनका भी कर्तव्य है कि वे वास्तव में ऊँचा बनने की चेष्टा करें। बुकर टी० वाशिङ्गटन के चरित्र से भी यह शिक्षा ग्रहण कर सकते है कि संसार में ज्ञान, गुण और परिश्रम का ही आदर होता है। उसने स्वयं सब तरह के कष्ट उठाकर शिक्षा प्राप्त की और अपनी योग्यता को स्वार्थ साधन में न लगाकर अपनी जाति के उत्थान में लगाया, तब नीग्रो जनों की दशा किसी हद तक सुधर सकी। पर हमको खेद से कहना पड़ता है कि हमारे देश में दो-चार व्यक्तियों को छोड़कर किसी अछूत ने अपनी जाति वालो के उत्थान के लिये स्वार्थ त्याग और कष्ट-सहन नहीं किया। अभी तक उनको जो अधिकार मिले हैं वे सवर्ण जातियों के ही थोड़े से सुधारकों और मानव सेवा व्रत धारियों के प्रयत्नों का फल है।

टस्केजी विद्यालय की स्थापना–

कुछ समय पश्चात् टस्केजी नामक स्थान के कुछ व्यक्तियों ने हैम्पटन विद्यालय के प्रिंसपल जनरल आर्म्सस्ट्रोंग को एक पत्र भेजा कि यदि वे किसी योग्य व्यक्ति को 'टस्केजी नार्मल स्कूल' की व्यवस्था करने को भेज सकें तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बड़ी कृपा हो। जनरल आर्म्सस्ट्रोंग को इसके लिये वाशिंगटन से बढ़कर और कोई व्यक्ति न जान पड़ा क्योंकि हृदय से अपनी जाति और देश की सेवा करना चाहते थे और इसके लिये सब तरह की कठिनाइयाँ उठाने को भी तैयार थे। इस लिये जब यह प्रस्ताव उसके सामने रखा गया तो 'टस्केजी' के विषय में किसी प्रकार की जानकारी न होने पर भी वह इस कार्य का भार उठाने को तैयार हो गये।

पर जब वह 'टस्केजी' पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ न तो कोई स्कूल का मकान है और न विद्यार्थी हैं, केवल सरकार के कुछ सहायता मिल जाने के आधार पर एक योजना बना ली गई है। पर वाशिंगटन ने हिम्मत नहीं हारी और वह दो-चार स्थानीय व्यक्तियों की सहायता से स्कूल की नींव जमाने में संलग्न हो गये। इसके लिये उसने आस-पास के स्थानों का दौरा करना आरम्भ किया, जहाँ नीग्रो लोगों की आबादी बहुत अधिक थी और वे कपास की खेती करके जीवन निर्वाह करते थे। वाशिंगटन ने देखा कि वे सब अब भी बुरी हालत में हैं और उनकी फसलें पहले से ही ऋणदाता साहूकारों के पास गिरवी रख दी जाती हैं। उनके लिये सरकार की तरफ से जगह-जगह थोड़े से स्कूल खुले हुए थे, पर उनमें से किसी का अपना मकान नहीं था और न कोई सामान था। इनमें से अधिकांश गिर्जाघरों में स्थापित थे और उनके मास्टर स्वयं भी बहुत कम पढ़े लिखे और निबल चरित्र के व्यक्ति थे। जब वाशिंगटन एक स्कूल के भीतर पहुँचे देखा कि विद्यार्थियों के पास पाठ्य पुस्तकें नहीं हैं और पाँच लड़के एक ही किताब से पढ़ रहे हैं।

इन नीग्रो लोगों की मानसिक स्थिति भी ऐसी गिरी हुई थी कि वे अपने को पूरा मनुष्य भी नहीं समझते थे। एक व्यक्ति ने अपने आरम्भिक जीवन का वर्णन करते हुए कहा कि-"हम पाँच जने इस स्थान के स्वामी के हाथ बेचे गये थे।" वाशिंगटन ने पूछा—"तुम्हारे चार साथी कौन थे ?" नीग्रो ने कहा—"एक तो मेरा भाई था और तीन खच्चर थे।" वे लोग अपने में और जानवरों में कुछ अन्तर ही न समझते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस तरह अनेक स्थानों में घूम फिरकर तथा रुपया और विद्यार्थियों का कुछ प्रबन्ध करके वाशिंगटन ने ४ जुलाई १८८१ को 'टस्केजी विद्यालय' की स्थापना कर दी। उस समय वह एक पुराने गिर्जाघर में ही खोला गया। कुल मिलाकर ३० विद्यार्थियों ने उसमें नाम लिखाया जिनमें से आधे लड़के और आधी लड़कियाँ थीं। पढ़ाने वाला मास्टर एकमात्र वाशिंगटन ही था। वह इन लड़कों को पाठ्य पुस्तकों द्वारा ही शिक्षा नहीं देता था वरन् उनको रहन-सहन और सभ्यता के नियमों की भी शिक्षा देता था। उसने देखा कि कितने ही लड़के बड़ी-बड़ी पुस्तकों का नाम तो लेते हैं,पर उसको अपना मुँह और हाथ पैर भी साफ करना नहीं आता। इसी प्रकार लड़कियाँ पृथ्वी के नक्शे में अफ्रीका के रेगिस्तान और चीन की राजधानी का तो पता लगा लेती थीं, पर यह नहीं जानती थीं कि भोजन की मेज पर छुरी और काँटा किस जगह रखा जाना चाहिये।

मिस डेविडसन का आगमन—

फिर भी वाशिंगटन के कठिन परिश्रम और सेवा-भावना से स्कूल की तरक्की होने लगी और पहले महीने के अन्त में विद्यार्थियों की संख्या पचास तक पहुँच गई। डेढ़ महीने बाद एक नये सहायक शिक्षक का आगमन हुआ जिसका नाम था मिस ओलविया ए० डेविडसन। वह भी वाशिंगटन की ही तरह सेवाभावी युवती थी और दक्षिणी रियासतों में शिक्षकों की विशेष रूप से आवश्यकता है, यह जानकर कई स्थानों में शिक्षक का कार्य करके 'टस्केजी' आई थी। उसने भी हैम्पटन से उच्च परीक्षा पास की थी। उसका रङ्ग काफी सफेद था, पर जब किसी ने उससे कहा कि आप अपने को नीग्रो प्रकट न करें वरन् गोरे अमरीकन की हैसियत से ही ट्रेनिंग कालेज में दाखिल हों तो उसने साफ इनकार कर दिया और कहा-"मैं किसी हालत में अपनी जातीयता छिपाकर दूसरे लोगों को धोखा नहीं दे सकती।"

मिस डेविडसन वाशिंगटन की सच्ची सहयोगी सिद्ध हुई और उसने 'टस्केजी' विद्यालय के निर्माण में जितना परिश्रम किया उतना अकेले किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्य व्यक्ति ने नहीं किया। वह उत्तरी रियासतों में घूम-घूम कर विद्यालय के के लिये चन्दा माँगकर लाती थी और स्कूल की दशा को हर तरह से सुधारने के लिये प्रयत्न भी करती रहती थी। यद्यपि आज 'टस्केजी' विद्यालय की कुल सम्पत्ति दो करोड़ रुपये से भी अधिक हो गई है, पर उस समय वाशिंगटन को प्राय: जगह-जगह से कर्ज लेकर विद्यालय की सामन्य इमारतों का निर्माण करना पड़ता था। जब कर्ज का भार बहुत बढ़ जाता,या जब खरीदे गयेसामान का बिल चुकाने में देर होने लगती तो मिस डेविडसन चन्दा इकट्ठा करके वाशिंगटन की सहायता करती। आगे चलकर वाशिंगटन के साथ उसका विवाह भी हो गया और उसने अपनी तमाम जिन्दगी नीग्रो जाति की इस महान संस्था को सफल बनाने में ही लगा दी।

स्वावलम्बन की शिक्षा—

टस्केजी विद्यालय की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें केवल पुस्तकों द्वारा पढ़ाई ही नहीं होती, वरन् हाथों से काम करके विद्यार्थियों को स्वावलम्बी बनाने की पूरी चेष्टा की जाती है। वाशिंगटन ने आरम्भ से ही इस बात को समझ लिया था कि उसके प्राय:सभी विद्यार्थी मजदूर या ग्रामीण किसानों के घर से आते हैं,अत: यदि स्कूल की परीक्षा पास करके वे अपने हाथ से कृषिकार्य करने के अयोग्य हो गये, तो यह उनके हित की दृष्टि से बड़ा बुरा होगा। यह सच है कि वहाँ जितने विद्यार्थी आते थे उनका लक्ष्य प्राय: मास्टर,क्लर्क या पादरी आदि बनकर मेहनत मजदूरी की जिंदगी से छुटकारा पाना ही होता था, पर वाशिंगटन समझते थे कि इन लोगों को न तो कहीं मास्टरी मिल सकती है न क्लर्की। इसलिये दूसरे वर्ष जैसे ही उनको कुछ एकड़ खेती की जमीन मिल गई, विद्यार्थियों को कृषि-विद्या की शिक्षा देना शुरू कर दी गई। बाद में स्कूल की इमारत के लिये ईंटें बनाने का काम भी विद्यार्थियों से कराया गया। आरम्भ में तो विद्यार्थी इससे बहुत चौंके कि जब यहाँ भी हमको मेहनत-मजदूरी करनी पड़ती है, तो स्कूल में पढ़ने से क्या फायदा? पर जब वाशिंगटन ने उनको श्रम की महिमा समझाई और स्वयं फावड़ा लेकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिट्टी खोदने और ईंटें बनाने का काम आरंभ किया तो विद्यार्थी भी उनका अनुसरण करने लगे।

निस्सन्देह ईंटें बनाने में वाशिंगटन को बड़ा परिश्रम करना पड़ा। उसका ईंटों को पकाने का भट्ठा तीन बार अधूरा ही बैठ गया जिसमें काफी हानि उठानी पड़ी। चौथी बार जब उसके पास कुछ भी शेष न बचा तो वह अपनी घड़ी को एक व्यक्ति के पास गिरवी रखकर १५ डालर लाया, और उस बार उसे सफलता मिल गई। तब तक टस्केजी के पास ईंटों का कोई कारखाना न था, और मकान बनाने वालों को उनके लिए बड़ा परेशान होना पड़ता था। इसलिये टस्केजी विद्यालय का कार्य बड़ी तेजी से उन्नति करने लगा और बीस वर्ष बाद प्रति वर्ष दस-पन्द्रह लाख बढ़िया किस्म की ईंटें तैयार होने लगीं। स्कूल की सभी इमारतें इन्हीं ईंटों से बनाई गईं और आस-पास के लोग भी उनको खरीदने हमेशा आने लगे। इस प्रकार जनता उससे परिचित हो गई और उसकी ईमानदारी पर विश्वास करने लगी।

जनरल आर्म्सस्ट्रौंग का आगमन—

जब वाशिंगटन का स्कूल सफलतापूर्वक चलने लगा और उसमें शिक्षकों की संख्या बहुत बढ़ गई, जो कि अधिकांश में हैम्पटन विद्यालय के ग्रेजुएट (स्नातक) थे, तो हैम्पटन के खजानची जनरल मार्शल उसका निरीक्षण करने आये। उन्होंने सबसे पहले टस्केजी विद्यालय की जमीन खरीदने को २५० डालर ऋण दिया था। उनके बाद वहाँ की प्रधान अध्यापिका, जिसने प्रथम दिन वाशिंगटन से झाड़ू दिलवा कर उसकी परीक्षा ली थी, इस विद्यालय को देखने आई। और बाद में जनरल आर्म्सस्ट्रौंग स्वयं आये। ये सब विद्यालय की इतनी जल्दी तरक्की होते देखकर बड़े प्रसन्न थे और आगे किस प्रकार कार्य करना चाहिये इसकी सम्मति भी देते थे। कुछ समय बाद जनरल आर्म्स स्ट्रौंग वाशिंगटन को लेकर उत्तर की रियासतों में लैक्चर देने गये। उनका उद्देश्य था कि इस प्रकार वाशिंगटन को उन स्थानों के ऐसे व्यक्तियों से परिचित करा दिया जाय, जो इस प्रकार के कार्यों में उदारतापूर्वक सहायता देने को तैयार रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जनरल आर्म्सस्ट्रौंग अमेरिकन गृह-युद्ध में नीग्रो लोगों का पक्ष लेकर दक्षिणी रियासतों के गोरों से लड़े थे, इस लिए वाशिङ्गटन का ख्याल था कि वे शायद दक्षिण के गोरों से अधिक बातचीत करना पसन्द न करते होंगे। पर 'टस्केजी' में जब बहुसंख्यक गोरे उनका स्वागत करने और भेंट करने आये तो वे उनसे भी बड़े प्रेम के साथ मिले और उनकी दशा सुधारने को भी बहुत सी उपयोगी सलाहें देते रहे। इससे वाशिङ्गटन ने सीखा कि महान् व्यक्ति कभी अपने विरोधी को भी कड़ी बात नहीं कहते। उन्होंने जनरल के इस गुण को अपना लिया और इसके फल से उनका कभी किसी से झगड़ा या वैमनस्य नहीं हुआ।

विद्यालय की वृद्धि और विस्तार—

वाशिङ्गटन और उनके सभी सहयोगी इतनी सच्ची लगन और परिश्रम के साथ विद्यार्थियों को शिक्षा देते और उन्हें सब प्रकार से सफल सांसारिक जीवन व्यतीत कर सकने योग्य बनाने का कार्य करते थे कि उनकी संख्या कुछ ही दिनों में ३० से बढ़कर ३०० से भी ऊपर हो गयी। उनके लिये एक के बाद एक बोर्डिङ्ग हाउस, व्याख्यानशाला, पुस्तकालय और उद्योग धन्धे सम्बन्धी छोटे वर्कशाप आदि बनते चले गये। समस्त देश में वाशिंगटन के निःस्वार्थ सेवाभाव और 'टस्केजी' विद्यालय की जीवन सुधार करने वाली शिक्षा की प्रशंसा फैल गई और इसलिये आवश्यकता के समय कोई न कोई उनकी सहायता को आगे आता ही रहा।

पर गुलामी से छुटकारा पाने वाले नीग्रो लोगों की दशा ऐसी हीन थी कि इतनी व्यवस्था हो जाने पर भी प्रार्थियों की भीड़ लगी ही रहती थी। जब विद्यालय में बोर्डिङ्ग हाउस (छात्रावास) बन गया तो बहुत से ऐसे भी स्त्री-पुरुष पढ़ने की इच्छा से आये जिनके पास स्कूल का खर्च देने के लिये कुछ भी न था। पर वे ज्ञान प्राप्त करने को इतने अधिक उत्सुक थे कि उनसे इनकार कर सकना भी उचित नहीं जान पड़ता था। इसलिये विद्यालय में एक रात्रि पाठशाला खोली गई और यह व्यवस्था की गई कि वे लोग दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भर किसी धन्धे या कारखाने में काम करें और रात में दो घण्टा पढ़ लें। इस प्रणाली का परिणाम बड़ा कल्याणकारी हुआ और सैकड़ों साधन हीन और निराश्रित व्यक्ति उसके द्वारा पढ़ लिखकर सज्जनोचि जीवन व्यतीत करने के योग्य बन गये। सन् १६०० में नाइट स्कूल में पढ़ने वालों को संख्या १२ से बढ़कर ४५७ तक पहुँच गई थी।

अटलाण्टा प्रदर्शनी में भाषण—

कुछ वर्ष बाद जब दक्षिणी रियासतों के प्रमुख नगर अटलाण्टा में औद्योगिक प्रदर्शनी की गई तो उसमें नीग्रो जाति वालों के लिए भी एक पृथक भवन बनाया गया और उसकी समस्त व्यवस्था उन्हीं लोगों के सिपुद की गई। प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर अन्य लोगों के साथ नीग्रो लोगों के भीएक प्रतिनिधि को भाषण करने को निमन्त्रित करने का निश्चय किया गया और बहुत सोच-विचार कर इसके लिये बुकर टी० वाशिङ्गटन को ही चुना गया। इस निमन्त्रण को पाकर वे अत्यन्त गम्भीर हो गये और परमात्मा को धन्यवाद देने लगे कि, जो व्यक्ति कुछ वर्ष पहले दूसरों का गुलाम था और भर पेट भोजन के लिये भी तरसता था, आज वह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के इतने प्रसिद्ध व्यक्तियों के समाज में सम्मान के साथ बुलाया जाता है।

जब वे अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ अटलाण्टा पहुंचे तो वहाँ के नीग्रोजनों ने उनका बहुत बड़ा जलूस निकाला जिसको प्रदर्शिनी तक पहुँचने में तीन घण्टा लग गये। व्याख्यान भवन हजारों लोगों की भीड़ से भरा था और हजारों ही व्यक्ति जगह न मिलने के कारण बाहर खड़े थे। उस समुदाय में सम्भवतः वे लोग भी होंगे जिनके यहाँ वाशिङ्गटन बाल्यावस्था में गुलामी करते थे। बहुसंख्यक गोरे इस भावना से भी भाषण सुनने आये थे कि "बाद में इस काले आदमी की खूब हँसी उड़ायेंगे" पर जब वाशिङ्गटन ने भाषण दिया और देश की उन्नति के लिये गोरे और कालों से मिलकर काम करने की पूर्ण हार्दिकता के साथ अपील की, तो उसका इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि भाषण समाप्त होते ही उस रियासत का प्रधान शासक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

(गवर्नर) सबसे पहले लपक कर हाथ मिलाने को आया । इसके बाद प्रदर्शनी में और समस्त नगर में इतने अधिक व्यक्ति उनको धन्यवाद देने आये कि वे उसने हाथ मिलाते-मिलाते थक गये और चुपचाप अपने विद्यालय को वापस चले गये ।

जार्ज वाशिङ्गटन कार्वर का सहयोग—

वाशिंगटन अपनी जाति के उद्धार के लिए स्वयं ही आत्मत्याग और परिश्रम नहीं कर रहे थे, वरन् अन्य सुयोग्य व्यक्तियों को भी प्रेरणा देकर इस उद्देश्य की पूर्ति में संलग्न करते थे । इस प्रकार उन्होंने टस्केजी में ऐसे कितने ही सुयोग्य कार्यकर्ता और विद्वान् एकत्रित कर लिये, जिनके प्रयत्नों से नीग्रो जाति का बड़ा कल्याण हुआ ।

इन विशेष व्यक्तियों में जार्ज वाशिंगटन कार्बर मुख्य थे । वे भी बचपन में एक गोरे किसान कार्बर के यहाँ दास की तरह काम करते थे । वे सर्वथा अनाथ थे, क्योंकि उनकी माँ को डाकू पकड ले गये थे और उसके बाद बाप भी कहीं चला गया था । ऐसी दशा में उसका पालन-पोषण उसकी मालकिन ने ही किया जो बड़े दयालु स्वाभाव की स्त्री थी । छः वर्ष की आयु से ही वह अपने मालिक के खेत और बगीचा में काम करने लगा और शीघ्र ही उसने कपड़ा धोने, खाना पकाने, चाय तैयार करने का भी अच्छा अभ्यास कर लिया । इस प्रकार उसे आगामी जीवन में जहाँ कहीं भी रहने का अवसर मिला वह अपनी उपयोगिता के कारण सबका प्यारा बना रहा । पास में एक पैसा न रहने पर भी अनेक प्रकार की कठिनाइयों को सहन करके उसने शिक्षा प्राप्त की और पेड़-पौधों में स्वाभाविक रुचि होने के कारण अन्त में वह एक अच्छा वनस्पति विज्ञान ज्ञाता बन गया,जिससे एक प्रसिद्ध कालेज में उसे बिना किसी प्रयास के प्रोफेसर का पद मिल गया ।

यद्यपि कार्बर ने प्रोफेसर नियुक्त किये जाने के दिन तक गरीबी में दिन काटे थे, उसको कभी ठीक भोजन और वस्त्र भी न मिल सके थे । पर वह केवल अपने आत्म-विश्वास सत्संकल्प और परिश्रम के बल पर दुःख-सुख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

की तरफ कुछ ध्यान न देता हुआ अध्ययन में लगा रहा और अन्त में वनस्पति विज्ञान की परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके उसने अपने समस्त सहपाठियों और अध्यापकों को, जो सब गोरे थ, चकित कर दिया। उसी दिन कालेज की प्रबन्ध कारिणी कमेटी ने उसे अपने यहाँ वनस्पति विज्ञान का प्रोफेसर नियुक्त कर दिया क्योंकि सबको यह निश्चय हो गया था कि वह आगे चल कर इस क्षेत्र में बड़ा नाम पैदा करेगा और उसके कारण विद्यालय की प्रतिष्ठा भी देश भर में बहुत अधिक बढ़ जायगी।

लोग समझते थे कि इतना अच्छा पद पाकर अब कार्बर सुखी जीवन बितावेगा और कुछ ही समय बाद उसे धन तथा यश की कुछ कमी नहीं रहेगी। पर कालेज में दो वर्ष काम करने के पश्चात् ही एक दिन उसे 'टस्केजी से भेजा हुआ डा० बुकर टी० वाशिङ्गटन का एक पत्र मिला जिसमें कार्बर को अपने यहाँ आमंत्रित करते हुए अन्त में लिखा था—

'यहाँ गरीबी का यह हाल है कि स्कूल में पढ़ने आने वाले लड़के मीलों नंगे पैर चल कर आते हैं। यहाँ के लोग जोतना बोना तक ठीक से नहीं जानते। यहाँ की मिट्टी ऐसी खराब है कि उसमे ईंटें बनाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो पाता। मैं कृषि विज्ञान का जानकार नहीं हूँ। मैं तो केवल लिखना-पढ़ना, जूते बनाना, ईंटें बनाना, दीवालें खड़ी करना ही सिखाता हूँ। मैं उन्हें खाना नहीं दे सकता,अन्न पैदा करना नही सिखा सकता। फलतः वे भूखों मर रहे हैं। इन्हें तुम्हारे जैसे व्यक्ति की आवश्यकता है।

"मैं तुम्हें पैसा, पद या यश नहीं दे सकता। इनमें से पहले दो तो तुम्हारे पास है और जिस जगह तुम काम कर रहे हो वहाँ से अन्तिम (यश) भी मिल जायगा। लेकिन मैं तुमसे इन तीनों चीजों को छोड़ने को कह रहा हूँ। मैं दे रहा हूँ तुमको काम, कठोर काम, यह काम है पिछड़ेपन, गरीबी और बरबादी से पीड़ित लोगों को ऊपर उठाने का,उनको पूर्ण मनुष्यत्व प्रदान करने का।"

कार्बर ने कई बार इस पत्र को पढ़ा। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि वहाँ की नंगी-भूखी जनता उसे पुकार रही है, उसे अपना सुख वैभव त्याग कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस सेवा व्रत को ग्रहण कर लेना चाहिये। उसने बिना अधिक आगा-पीछा किये एक साधारण पत्र में अपनी स्वीकृति लिखकर भेज दी और कुछ ही दिन बाद सिम्पसन कालेज से त्यागपत्र देकर टस्केजी पहुँच गया।

कूड़े-कवाड़ से वैज्ञानिक प्रयोगशाला—

जब कार्बर टस्केजी पहुँचे तो वाशिङ्गटन ने उनका हार्दिक स्वागत किया और खड़े-खड़े ही दोनों बातें करने लगे। कार्वर ने सबसे पहले 'प्रयोगशाला' देखनी चाही, क्योंकि किसी बड़े वैज्ञानिक का काम इसके बिना नहीं चल सकता। पर बुकर ने कहा—"मैं खाली जमीन आपको दे सकता हूँ और बुद्धि भगवान ने आपको दी है।"

कार्बर ने समझ लिया कि यहाँ साधनों का सर्वथा अभाव है और उसे इन सबकी व्यवस्था अपने परिश्रम से ही करनी पड़ेगी। उसने भी अपना जीवन ऐसी ही बुरी परिस्थितियों में काटा था। इसलिए वह साधनों और धन के लिये चिन्तित नहीं हुआ, वरन् भगवान का नाम लेकर अध्यापन कार्य में प्रवृत्त हो गया।

कार्वर के सामने केवल लड़कों को पढ़ाने की समस्या नहीं थी, वरन् वह उनकी ऐसी शिक्षा देना चाहता था जिससे उस प्रदेश की गरीब जनता अपनी कुछ उन्नति कर सके। इसका एकमात्र मार्ग केवल यही था कि वहाँ के खेतों की पैदावार बढ़ाई जाय। लेकिन जब उसने इसकी चर्चा खेती वाले विद्यार्थियों से की तो उसने देखा कि उनमें इस विषय की कुछ भी रुचि और उत्साह नहीं है, क्योंकि वे समझते थे कि भूमि के खराब होने के कारण वे इस विषय में कुछ भी तरक्की नहीं कर सकते।

पर कार्बर ने बतलाया कि उनकी यह भावना ठीक नहीं है। भूमि और प्रकृति में सर्वत्र अनन्त सम्पत्ति भरी हुई है। संसार में कोई चीज व्यर्थ या बेकार नहीं है। अगर हम ईश्वर की दी हुई बुद्धि से ठीक तरह काम लें और हृदय से परिश्रम करें तो कोई कारण नहीं कि हम असम्भव समझे जाने वाले कामों को भी सम्भव न बना सकें। इसके लिये यहाँ की मिट्टी तथा पेड़-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पौधों की ठीक तरह जाँच करने की आवश्यकता है। यदि हमारे पास नियमित 'प्रयोगशाला' नहीं है और उसके लिये हम कीमती सामग्री खरीद भी नहीं सकते, तो हम टूटी-फूटी चीजों को काम के लायक बनाकर ही अपने कार्य को आगे बढ़ायेंगे।

बस वे अपने कुछ विद्यार्थियों को लेकर कस्बे में गये और लोगों के यहाँ से बेकार पड़े हुए डिब्बे, लैम्प, कड़ाही, पतीली, बोतलें आदि माँग लाये और इन्हीं के द्वारा वैज्ञानिक प्रयोग करने लगे। उन्होंने विद्यालय से खेती के लिये बीस एकड़ जमीन ली। जिस समय प्रोफेसर कार्वर हल द्वारा उसको जोतने लगे, तो छात्रों और बस्ती के लोगों के लिये एक तमाशा ही बन गया। उन्होंने सबसे पहले उसमें ग्वार और मकई आदि की खेती की। इससे विद्यार्थी बड़े निराश हुए, क्योंकि ये पशुओं को खाने की चीजें समझी जाती थीं। पर जब एक दिन कार्वर ने इन्हीं के व्यंजन तैयार करके उनको खिलाये तो उनको वे बहुत स्वादिष्ट जान पड़े। इसके बाद उन्होंने उसी भूमि में आलू बोये तो लोगों ने सोचा कि इस भूमि में आलू क्या पैदा होंगे? पर आलू की फसल ऐसी बढ़िया हुई कि लोग आश्चर्य में पड़ गये। फिर उन्होंने कपास बोई और उसकी पैदावार भी दूसरे खेतों की अपेक्षा दूनी-चौगुनी हुई।

प्रो० कार्वर ने लोगों को समझाया कि यह जमीन खराब नहीं है, पर लोग उसका उपयोग करना नहीं जानते। अगर अधिक पैदावार करना चाहते हो तो एक जमीन पर लगातार एक ही फसल मत करो। बल्कि 'रोटेशन-प्रणाली' (एक के बाद दूसरी चीज की खेती करना) से काम लो। उनके उपदेशों से उस प्रदेश के लोगों को कृषि-विज्ञान सम्बन्धी अनेक उपयोगी बातों का ज्ञान हुआ और कुछ ही वर्षों में उनकी आर्थिक स्थिति में पहले की अपेक्षा बहुत सुधार हो गया।

प्रोफेसर कार्वर ने अपना कार्य यहीं समाप्त नहीं कर दिया, वरन् वहाँ उत्पन्न होने वाली वस्तुओं से तरह-तरह की उपयोगी और बाजार में बिक सकने लायक चीजें बनाने की शिक्षा भी उन्होंने लोगों को दी। उन्होंने वहाँ की मिट्टी में से कई तरह के रंग निकालकर उनका पेण्ट तैयार किया,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिससे वहाँ के नये गिरजाघर को बहुत थोड़े खर्च में बहुत सुन्दर रंग दिया गया। बीमार पड़ने वाले लोगों को उन्होंने ऐसी जंगली जड़ी बूटियाँ और कन्द बतलाये जिनमें 'विटामिन' बहुत अधिक थे। इनका सेवन करके सैकड़ों लोग चंगे हो गये तो वे कार्बर को एक बड़ा डाक्टर भी मानने लगे। उन्होंने मूँगफली से प्लास्टिक, कागज, दफ्ती, काफी, क्रीम, दूध आदि से ३०० प्रकार की चीजें तैयार कर सकने के आविष्कार किये और आलू से ११८ चीजें बनाईं। अन्य रद्दी समझी जाने वाली चीजों से भी उन्होंने अनेक उपयोगी वस्तुएँ तैयार कीं।

इन आविष्कारों का हाल सुनकर अनेक पूँजीपति उनके पास दौड़े आये और इन आविष्कारों को पेटेण्ट (रजिस्टर्ड) कराके साझे में कारखाना खोलने की सलाह देने लगे। रूस की सरकार ने उन्हें अपने यहाँ की पंचवर्षीय योजना में सहयोग देने के लिये आमन्त्रित किया। मैक्सिको के खानों के मालिकों ने उनको अपने यहाँ बुलाना चाहा। वेस्टइण्डीज के लोगों ने भी उनको अपने देश में रखने की चेष्टा की। अगर वे चाहते तो पूँजीपतियों के साथ मिलकर इनमें से किसी चीज का व्यापार करके कुछ समय में ही लखपती करोड़पति हो सकते थे, पर उन्होंने इन सबको अस्वीकार कर दिया और अपने देश की गरीब जनता के उद्धार को ही सच्चा 'धर्म' मानकर टस्केजी के नीग्रो-विद्यालय में डटे रहे और नाम मात्र के वेतन पर ४० वर्ष अपनी जाति की सेवा करते रहे। वे ज्ञान को बेचना अच्छा नहीं समझते थे वरन् मानव-मात्र के हित के लिये उसका उपयोग करना ही उनका आदर्श था। इसलिये जो कोई उनके पास आकर इस सम्बन्ध में कुछ जानना चाहता था, वह चाहे काला हो या गोरा, वे सबको निष्कपट भाव से उचित सलाह देते और मार्गदर्शन करते। इस प्रकार ४० वर्ष तक गरीबों के बीच में काम करते हुए उन्होंने कितने व्यक्तियों का जीवन-सुधार कर दिया इसकी गणना नहीं की जा सकती।

योरोप-यात्रा—

टस्केजी-विद्यालय ने ऐसे ही कई स्वार्थत्यागी महामानवों के सहयोग से देश में इतनी ख्याति प्राप्त करली कि सरकार और प्रसिद्ध धनी भी उसको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मुक्तहस्त से सहायता करने लगे । सन् १८८६ में सरकार ने उसे २५ हजार एकड़ सरकारी भूमि प्रदान की जिसमें अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते थे । सन् १८९८ में अमरीका के प्रेसीडेण्ट उसका निरीक्षण करने आये । उसी समय बोस्टन के कुछ धनी मित्रों ने वाशिंगटन को आर्थिक सहायता देकर योरोप भ्रमण के लिये भेजा जिससे वे वर्षों तक लगातार परिश्रम करते रहने के पश्चात् दो-तीन महीने का विश्राम कर सके और साथ ही वहाँ की प्रसिद्ध शिक्षा संस्थाओं का निरीक्षण करके टस्केजी विद्यालय को और भी ऊँचा उठा सके । हालैंड में उन्होंने देखा कि लोग नई-नई विधियों द्वारा थोड़ा-सी जमीन में कितनी अधिक पैदावार प्राप्त करते हैं । यह अनुभव उनके विद्यालय के लिये भी उपयोगी था जिसके अधिकांश विद्यार्थी किसान परिवारों के ही थे । पेरिस में उनके सम्मान में यूनीवर्सिटी क्लब की तरफ से स्वागत समारोह किया गया । पेरिस में ही उनकी भेंट अपने पूर्व परिचित नीग्रो कलाकार मि० टैनरसे हुई जो योरोप में अपनी कलाकृतियों के आधार पर बड़ा नाम पैदा कर रहे थे । इसके पश्चात् वाशिंगटन अपने विद्यार्थियों को प्राय: मि० टैनर का उदाहरण देकर उन्हें यह प्रेरणा दिया करते थे कि अगर वे वास्तव में किसी क्षेत्र में अपने परिश्रम और प्रतिभा के बल पर कोई बड़ी सफलता प्राप्त करके दिखा सकेंगे तो संसार उनका सम्मान अवश्य करेगा ।

लन्दन पहुँचने पर उनको सभा-समितियों के इतने अधिक निमन्त्रण पत्र मिले कि यदि उनको स्वीकार किया जाता तो उसमें महीनों का समय लग जाता और 'विश्राम' का उद्देश्य भी व्यर्थ हो जाता । अन्त में उन्होंने अमेरिकन राजदूत की सलाह से एक बड़े व्याख्यान हाल में एक बार भाषण किया जिसका प्रचार इङ्गलैंड तथा अमरिका के पत्रों द्वारा दूर-दूर तक किया गया। महारानी विक्टोरिया से भी उनकी भेंट हुई । पार्लीमेण्ट में भी उन्होंने सरकारी अधिकारियों से अमरीका के नीग्रो जनों के सम्बन्ध में वार्तालाप किया । लन्दन में अनेक अँगरेजों से उनकी मित्रता हो गई जो सदैव उनके शुभचिन्तक बने रहे । जब वे अमरीका वापस लौटे तो उनके जन्म-स्थान चार्ल्सटन नगर के गोरे और काले सभी लोगों ने उनको नियन्त्रित करके बड़ी धूमधाम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के साथ स्वागत किया। । इस नगर में उनकी बाल्यावस्था बड़ी गरीबी के साथ गुजरी थी और उन्होंने कई लोगों के यहाँ घरेलू कामों की नौकरी भी की थी। उनमें से कितने ही लोग स्वागत-समारोह में मौजूद थे। पर किसी के मन में यह ख्याल न था कि—"अरे यह तो हमारे यहाँ दास का काम कर चुका है।" वरन् भूतपूर्व गवर्नरों और जनरलों तक ने उनका हार्दिक प्रेम से स्वागत किया और इस बात को अपने लिये बड़े गौरव की समझा कि हमारे यहाँ का एक व्यक्ति इस तरह देशप्रसिद्ध होकर ऊँची पदवी पर पहुँच गया है।

यह घटना हमारे देशवासियों के लिये शिक्षाजनक है। यहाँ जिसने एक बार कोई छोटा पेशा या मामूली नौकरी कर ली फिर उसे सदा छोटा ही समझेंगे, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो। यह हृदय की सङ्कीर्णता का लक्षण है और इस प्रकार के लोगों का समाज कभी बहुत ऊँचा नहीं उठ सकता। मनुष्य को तो सदैव ऐसा उदार भाव रखना चाहिये कि कई छोटे लोगों को भी सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा दे और उनका उत्साह बढ़ाता रहे। ऐसे ही उदार व्यक्ति समाज और देश की उन्नति के आधार होते हैं।

सहयोग और समन्वय की भावना—

यद्यपि राजनीतिक और सामाजिक आन्दोलनों में प्रायः विरोध और संघर्ष के अवसर भी आ जाते हैं, तब भी सच्चे परोपकारी और सेवाभावी कार्यकर्ता अपना लक्ष्य विशेषतः सहयोग और समन्वय पर ही रखते हैं। उग्रता-पूर्ण कार्यक्रम थोड़े समय के लिये आवश्यक हो सकते हैं, और सामान्य जनता भी उनके द्वारा जोश में आकर कुछ करने और मरने को तत्पर हो सकती है, पर यह मार्ग सदैव अल्पकालीन और अस्थायी ही रहता है। उसके द्वारा कोई स्थायी रचनात्मक कार्य नहीं हो सकता और दीन-दुःखी तथा पीड़ित लोगों की दशा का सुधार किया जा सकता है। हम विशेष परिस्थितियों में आतङ्ककारी अथवा सशस्त्र क्रान्ति को कार्यवाही करने वाले और देशोद्धार के लिये हँसते-हँसते मृत्यु-वेदी पर अपना बलिदान कर देने वाले वीर पुरुषों का महत्त्व कम करना नहीं चाहते, वरम् हमारा आशय यही है कि किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समाज की स्थायी उन्नति और प्रगति के लिये लगातार श्रम, अनवरत स्वार्थ त्याग की आवश्यकता पड़ती है जो और भी कठिन और दुर्लभ है।

बुकर टी० वाशिंगटन ऐसे ही महान् और इतिहास में स्थायी स्थान प्राप्त कर सकने वाले समाजसेवी कार्यकर्ताओं में से थे। यद्यपि आज अमरीका के नीग्रो युवक बम और पिस्तौल लेकर गोरे लोगों का मुकाबला करने लगे हैं पर बुकर के समय में ऐसी परिस्थिति सम्भव नहीं थी। उस समय सभी नीग्रो और स्वयं बुकर भी गोरों के जरखरीद गुलाम थे, उनमें मानवीय स्वाभिमान का नाम भी न था और मालिक के कहने पर कैसा भी नीच जान पड़ने वाला काम करने से इनकार नहीं करते थे। अगर कोई मालिक गुस्से में आकर अपने नीग्रो गुलाम को पीटते-पीटते जान से मार देता तो भी उसे कानून के अनुसार दोषी नहीं माना जाता था और न कोई दण्ड मिलता था। कोई गोरा किसी नीग्रो स्त्री का उपभोग करना चाहता तो उसमें भी किसी तरह का ऐतराज नहीं होता था। सारांश यही कि उस समय अमरीका की दक्षिणी रियासतों मे नीग्रो गुलामों का दर्जा ठीक गाय, बकरी, घोड़ा, गधा आदि पशुओं के समान था, जिनके साथ उनके स्वामी कैसा भी व्यवहार कर सकते है। उस समय किसी नीग्रो का पुस्तक लेकर पढ़ना या पढ़ाना एक जुर्म माना जाता था जैसा कि किसी अन्धकार युग में हमारे यहाँ भी शूद्रों के लिये नियम बना दिया गया था।

इस प्रकार की परिस्थिति में और ऐसे मानवता से हीन प्राणियों का उद्धार और उत्थान सहज न था। उनके पास कठोर परिश्रम करने पर भी पेट भरने के पूरे साधन न थे, तब वे क्या तो ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा करते और किस प्रकार उसका उपयोग करते ?

काले लोगों से सहानुभूति रखने वाले गोरे—

इसलिये बुकर ने सदा सहयोग और समन्वय की भावना से ही काम लिया और अधिकांश मे गोरे लोगो से ही हर तरह की सहायता लेकर अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाति वालों के लिये इतनी बड़ी शिक्षा-संस्था स्थापित कर दी कि जिसके द्वारा आज नीग्रो जाति की काया-पलट हो चुकी है और कानून द्वारा उनको गोरों के समान ही सब अधिकार प्राप्त हो चुके हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि उस समय भी गोरे लोगों में ऐसे अनेक मानवतावादी और परोपकारी सज्जन थे जो दीनहीन लोगों के लिये निःस्वार्थ भाव से सब कुछ करने और स्वयं कष्ट उठाने को तैयार रहते थे। स्वयं वाशिंगटन जिन जनरल आर्म्स स्ट्रौंग की सहायता से पढ़ा था और जिन जनरल मार्शल से रुपया उधार लेकर टस्केजी विद्यालय के लिये सर्व प्रथम थोड़ी भूमि खरीदी थी, वे सब गोरे ही थे। उसके बाद विद्यालय के स्थापित हो जाने पर भी वाशिंगटन और उनके सहकारी सदैव उत्तरी रियासतों में और दक्षिण में भी सदैव ऐसे गोरे लोगों के पास जाते रहते थे जो इस प्रकार के परोपकारी कार्यों के लिये दान करने को तैयार होते थे। इस प्रकार की एक घटना का वर्णन करते हुए उन्होंने अपने आत्म-चरित्र में लिखा है—

"एक बार मुझे सूचना मिली कि एक सज्जन जो स्टैमफोर्ड से दो मील दूर एकान्त स्थान में रहता है 'टस्केजी' विद्यालय की सहायता कर सकता है। एक दिन अत्यन्त शीत और तूफान सहन करता हुआ दो मील पैदल चलकर मैं उसके पास गया। कुछ कठिनाई के साथ उससे भेंट हो सकी और उसने मेरी बातें ध्यान से सुन भी लीं, पर न तो कुछ दिया और न वायदा किया मैंने लौटते समय अपने मन में समझ लिया कि आज के ये तीन घण्टे व्यर्थ गये। फिर भी मुझे इस बात का सन्तोष था कि मैंने अपना कर्तव्य पालन कर लिया। अगर मैं उसके पास न जाता तो मुझे यह बात खटकती ही रहती कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया।"

"दो वर्ष बाद अकस्मात् मेरे पास एक पत्र आया जिसे खोलने पर मालूम पड़ा कि वह उसी व्यक्ति का है, जिसके यहाँ से मैं दो साल पूर्व खाली हाथ लौट आया था। उस पत्र के साथ दस हजार डालर (उस समय का ३२ हजार रुपया) का एक बैंक ड्राफ्ट भी था और लिखा था कि 'मैंने इस रुपये को अपने उत्तराधिकार पत्र में आपके विद्यालय के लिये लिखा था। पर अब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मुझे अनुभव हो रहा है कि मैं इसे अभी दे दूँ, जिससे यह विद्यालय की प्रगति के लिये काम में लगाया जा सके।'' बुकर का कहना है कि यह उस समय तक मिलने वाले दानों में सबसे बड़ी रकम का दान था और यह ऐसे अवसर पर मिला था जब कि विद्यालय के ऋण को न चुका सकने की चिन्ता से हम व्यकुल हो रहे थे।

दैवी कृपा का एक उदाहरण--

इसी प्रकार एक दूसरे अवसर पर कालेज के विद्यार्थियों के सामने धर्मोपदेश देने को बोस्टन के एक बड़े धर्माचार्य को बुलावा गया। उस समय तक विद्यालय के पास कोई ऐसा प्रार्थना-भवन या धर्म मन्दिर (गिरजाघर) नहीं था जिसमें हजार-पाँच सौ व्यक्ति एक साथ बैठ सकें। इस लिये एक शामियाना लगाकर काम चलाया गया। पर जिस समय सभा का काम आधा ही हुआ था एकाएक जोरों की बरसात होने लग गई और शामियाने में पानी टपकने लगा। यह देख कर एक व्यक्ति धर्माचार्य के मस्तक पर छाता लगा कर खड़ा हो गया। कुछ समय बाद वर्षा बन्द हो गई तो उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया। इसके पश्चात् जब वे अपने ठहरने के कमरे में गये और अपने कपड़ों को सुखाने लगे तो उन्होंने बातचीत करते हुए कहा कि टस्केजी में धर्मोपदेश के लिये एक बड़ा गिरजाघर बन जाय तो बड़ी अच्छी हो। इसके दूसरे ही दिन दो महिलाओं की तरफ से, जो उस समय इटली में यात्रा कर रही थीं, अकस्मात् एक पत्र आया कि वे टस्केजी विद्यालय में दान स्वरूप अच्छा गिरजाघर बनवा देना चाहती हैं बुकर ने इसे एक दैवी घटना ही समझा और भगवान को घुटनों के बल झुक कर धन्यवाद दिया। धर्म की दृष्टि से वे एक सच्चे ईसाई थे और सर्वथा धनहीन होने पर भी भगवान की कृपा के भरोसे ही इतना बड़ा आयोजन कर सके थे।

श्री कार्नेगी द्वारा पुस्तकालय भवन का दान--

इसी प्रकार जब उनको विद्यालय के पुस्तकालय के लिये मकान की आवश्यकता प्रतीत हुई तो उन्होंने अमरीका के प्रसिद्ध धन कुबेर और विद्या-व्यसनी श्री कार्नेगी से इसके लिये प्रार्थना की। पर उस समय उन्होंने उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रार्थना पर बहुत कम ध्यान दिया । दस वर्ष बाद सन् १९०० में उन्होंने फिर इस सम्बन्ध में श्री कार्नेगी को पत्र लिखा कि "इस समय विद्यालय में ११०० छात्र, ८६ अध्यापक और अन्य कार्यकर्ता शिक्षा प्रसार के कार्य में लगे हुए हैं। हमारे पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या भी १२ हजार हो गई है । पर हमारे पास अभी तक कोई ऐसा उपयुक्त स्थान नहीं है, जहाँ बैठकर इनसे लाभ उठाया जा सके । इसके लिये उपयुक्त भवन २० हजार में बनाया जा सकता है । बहुत-सा निर्माण कार्य तो विद्यार्थी गण स्वयं कर लेंगे, पर सामग्री के लिये धन की आवश्यकता होगी ।" इस पर कार्नेगी ने तुरन्त स्वीकार पत्र भेज दिया और लिखा कि "सामिग्री का जितना हिसाब हो वह उनके पास भेज दिया जाय, वे उसे चुका देने को तैयार हैं ।

अमरीका के प्रेसीडेण्ट का आगमन—

बुकर टी० वाशिंगटन की आरम्भ से ही यह इच्छा थी कि नीग्रो-विद्यालय को उन्नति करके इस योग्य बनाया जाय कि अमरीका का प्रेसीडेण्ट यहाँ पधारे । अन्त में सन् १८९८ में १६ दिसम्बर को ऐसा दिन आया जब कि प्रेसीडेण्ट मैकिनले अपनी धर्मपत्नी और मन्त्रिमंडल के कितने ही सदस्यों के साथ टस्केजी आये । दक्षिण अमरीका में एक छोटे से कस्बे के लिए वास्तव में यह बड़े सौभाग्य और महत्व का अवसर था और उस उत्सव को देखने के लिये चारों तरफ के गाँवों और कस्बों की इतनी जनता उमड़ पड़ी कि टस्केजी में उसका समा सकना भी कठिन हो गया विद्यालय के लगभग एक हजार विद्यार्थी जलूस बनाकर प्रेसीडेण्ट के सामने होकर निकले, जिनमें से प्रत्येक के हाथ में एक गन्ना था और उसके सिरे पर कपास के कुछ खुले हुये डोंड झण्डे की तरह टाँगे हुए थे । उनके पीछे कितनी ही चौकियाँ चल रही थीं जिनमें विद्यालय में सिखाये जाने वाले उद्योग धन्धों का प्रदर्शन किया गया था । बुकर ने संस्था का परिचय देते हुए कहा—

"बीस वर्ष पहले टस्केजी का यह विद्यालय एक टूटे-फूटे मुर्गी पालने के घर तथा दो चार पुराने कमरों में आरम्भ किया गया था । उस समय कुल-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तीस विद्यार्थी इसमें पढ़ते थे और केवल एक ही अध्यापक था। इस समय विद्यालय के पास २३ हजार एकड़ जमीन है जिसमें से एक हजार एकड़ पर प्रतिवर्ष केवल विद्यार्थियों के श्रम द्वारा खेती की जाती है। विद्यालय की भूमि पर छोटी बड़ी ६६ इमारतें बन गई हैं और वे भी प्रायः सभी विद्यार्थियों द्वारा ही बनाई गई हैं। जब विद्यार्थीगण खेती या मकान बनाने का कार्य करते हैं तो इन विषयों के हाशियार शिक्षक उनको इस सम्बन्ध में नये से नये तरीकों की शिक्षा देते रहते हैं।"

प्रेसीडेण्ड ने उत्तर देते हुए कहा कि "टस्केजी का विद्यालय देश के भीतर ही नहीं विदेशों तक में प्रसिद्ध हो चुका है। यह समस्त कार्य केवल एक व्यक्ति के उत्साह और प्रेरणा से सम्पन्न हो सका, यह कम प्रशंसा की बात नहीं है।" जल-सेना के सेक्रेटरी श्री लौंग ने कहा कि 'अपने देश के काले और गोरे उद्यागशील सज्जनों द्वारा ऐसा प्रशंसनीय कार्य होते देख कर मेरा हृदय प्रसन्नता से भर गया। भगवान इसके संचालक का कल्याण करे जिसने गुलामी की हालत से ऊपर उठकर इतना महान कार्य कर दिखाया।" अमरीका के पास्ट मास्टर जनरल श्री स्मिथ ने कहा हमने देश के विभिन्न स्थानों में बड़े-बड़े शानदार उत्सव और रङ्ग-बिरंगे प्रदर्शन देखे हैं, पर मेरा विश्वास है कि उनमें से कोई ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने वाला नहीं था, जैसा कि आज का यह उत्सव प्रतीत हो रहा है, क्योंकि इसके द्वारा हमको अपने देश के उज्ज्वल भविष्य के लिये एक महान प्रेरणा मिलती है।"

एक सच्चे जन-नेता का सच्चा स्मारक--

इस प्रकार सहृदयता और सद्भावना के आधार पर कार्य-संचालन करते हुए गोरे व्यक्तियों की सहायता से ही बुकर ने नीग्रो जाति के उद्धार का एक महान् आयोजन पूरा कर दिखाया, यद्यपि उनके समय में ही दुष्ट प्रकृति के गोरों ने "कू क्लक्स क्लैन" नामक गुप्त-दल स्थापित कर लिया था जो गोरों की प्रतियोगिता करने वाले नीग्रो लोगों को रात्रि के समय आक्रमण करके तरह-तरह से दण्डित करता था, पर बुकर ने कभी अपनी सद्भावना में कभी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं आने दी। वे अपने जीवन के अन्त तक कालों और गोरों में एक्य, सहयोग और प्रेम का प्रचार करते रहे। इसके फल स्वरूप आज भी उनको अमरीका का महान पुरुष माना जाता है। सन् १९५६ में उनकी शताब्दी के अवसर पर अमरीका की सरकार ने उनका एक उपयुक्त स्मारक बनाने के लिये दस लाख रुपया की रकम मंजूर की और उनकी स्मृति में पचास लाख आधे डालर के सिक्के और डाक निकट निकाले गये। आज उनका जन्म-स्थान जो गुलामों के रहने का छोटी सी कोठरी थी एक 'तीर्थ स्थान' बन गई है, जहाँ प्रति वर्ष लाखों नीग्रो और कुछ गोरे भी अपनी भक्ति प्रदर्शन के लिये जाया करते हैं।

बूकर टी० वाशिंगटन का जीवन हम सबके लिये, और खास तौर पर साधनहीन गरीब युवकों के लिये आदर्श और प्रेरणादायक है। उनकी गरीबी की कोई सीमा न थी, क्योंकि गुलामों का सब कुछ उनके मालिक का ही होता है। समाज में उनको किसी प्रकार का अधिकार न था और प्रगति के कोई साधन उनको प्राप्त न थे पर ऐसी स्थिति में भी वे केवल अपनी अन्तः प्रेरणा से ऊपर उठे और सैकड़ों प्रकार की कठिनाइयाँ उठाकर शिक्षा प्राप्त करली। पर उनकी सबसे बड़ी महानता तो यह थी कि शिक्षा प्राप्त करके उसका उपयोग अपने और निजी परिवार के सुख के लिये करने के बजाय उसके द्वारा अपनी जाति के अन्य व्यक्तियों को ऊँचा उठाने का प्रयत्न ही वे निरन्तर करते रहे। उनकी पत्नी ने भी विद्यालय की उन्नति के लिये परिश्रम करते-करते प्राण अर्पण कर दिये और अपने पुत्रों को भी उन्होंने टस्केजी के अन्य विद्यार्थियों के समान ईंटें बनाने का काम सिखाकर जाति का सेवक ही बनाया।

यदि हम लोग भी अपनी साधारण सम्पत्ति या छोटी मोटी जायदादों का मोह त्याग कर अपने देश भाइयों की उन्नति के लिए अपने जीवन का कुछ भाग अर्पण करदें, तो क्या वह एक 'महानता' कार्य न होगा? हमको स्मरण रखना चाहिये कि जनता उसी का हृदय से सम्मान करती है और उसी का मरने के पश्चात् भी याद रखती है, जो दूसरे लोगों की भलाई के लिये कुछ काम करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिए आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवम् आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रांति के लिए जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है, उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

'प्रकाशक—युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org